# सप्तांश वर्ग कुंडली

अर्चना गुप्ता, झारखंड

**जन्मकुंडली का सातवां वर्ग सप्तांश कहलाता है यह जन्मकुंडली के पंचम भाव के कारकत्वों को प्रकाशित करता है। यह सप्तम भाव के उन तत्त्वों को रेखांकित करता है जिनका परिणाम संतान उत्पत्ति से है। सप्तांश वर्ग कुंडली को पूर्व जन्म के पुण्य का वर्तमान जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का फल देखने के लिए प्रयोग किया जाता है। इस वर्ग कुंडली से संतान, पौत्र-पौत्री, मंत्र सिद्धि, चिंतन मनन, सट्टेबाजी, विद्यार्थी, अनुयायी, शिष्य, जीवनसाथी की समृद्धि, सृजनात्मकता, सफलता और परिणामों के वास्तविक बोध का विश्लेषण किया जा सकता है। सप्तांश वर्ग कुंडली में प्रत्येक राशि को 7 बाराबर भागों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक सप्तांश का मान 4°17' 8.57" सेकंड होता है।**

### पाराशरी सप्तांश

जन्मकुंडली में ग्रह यदि विषम राशि में स्थित हों तो सप्तांश की गणना उसी राशि से अपसव्य क्रम में आरंभ होती है और यदि ग्रह सम राशि में स्थित हों तो सप्तांश की गणना ग्रह अवस्थित राशि से सातवें राशि से सव्य क्रम में आरंभ होगी। अधिकांशतः सप्तांश वर्गकुंडली बनाने के लिए पाराशर विधि ही प्रचलित है।

### उदाहरण कुंडली 1

लग्न 14 डिग्री 47 मिनट का है। यहां जन्मकुंडली में लग्न में धनु राशि विषम राशि उदय हो रही है इसलिए लग्न विषम राशि

लग्न : 20.11.1945, 09:06, कराची

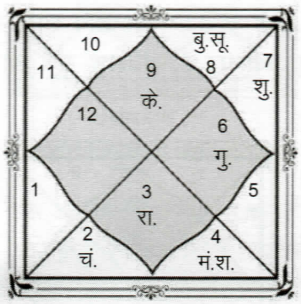


नवमांश

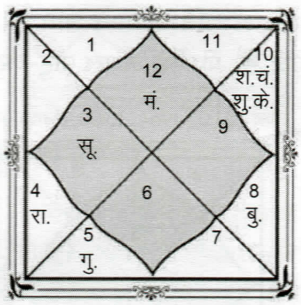


में चौथे सप्तमांश में स्थित है। इसकी गणना धनु लग्न से चौथी राशि तक होगी जो कि मीन राशि आएगी अतः सप्तमांश कुंडली में मीन राशि लग्न में उदय होगी।

लग्नेश गुरु कन्या राशि में 25 डिग्री 5 मिनट के हैं जो कि सम राशि है और छठे सप्तमांश में है। अतः कन्या से सातवें मीन राशि से छठे सप्तमांश तक गिनती करने से सिंह राशि में अवस्थित होंगे। सप्तमांश कुंडली में, इसी तरह से अन्य ग्रह भी अवस्थित किए जाएंगे।

### सप्तमांश चार्ट के विभिन्न भावों के कारकत्व

**1. लग्न :** जातक की संतान होगी कि नहीं, संतान का सुख आदि को दर्शाता है यह भाग्य को भी दर्शाता है जो पिछले जन्म के पुण्य से प्राप्त होता है।

**2. द्वितीय भाव :** पूर्व जन्म के द्वारा प्रभावित कर्म जैसे अंतर्निहित संस्कार - संतान की सामान्य धन संपत्ति आदि।

**3. तृतीय भाव :** संतान के द्वारा किए जाने वाले शौर्य कर्म - जातक के पिछले कर्मों का फल।

**4. चतुर्थ भाव :** संतान से प्राप्त होने वाली खुशी व सुख और संतान का सुख व खुशी।

**5. पंचम भाव :** पूर्व पुण्य का भाव, पहली संतान, एक बली पांचवां भाव व्यक्ति की इस जिंदगी को अनिवार्य रूप से आनंदमय ही बनाता है क्योंकि यह जातक की मानसिक प्रवृत्ति और बुद्धिमानी को संचालित करता है।

**6. षष्ठम भाव :** संतान से प्राप्त समस्याएं, संतान की बीमारियां, संतान के संदर्भ में जीवनसाथी को कष्ट, दुख, पीड़ा।

**7. सप्तम भाव :** यह पंचम भाव से तृतीय भाव है। यह विपरीत लिंगी से संबंध, गर्भधारण को दर्शाता है।

**8. अष्टम भाव :** विपरीत लिंगी से संबंधों की आयु, संतान की आयु, संतान प्राप्ति में आने वाली रुकावट, गर्भपात आदि इसी भाव से देखे जाते हैं।

**9. नवम भाव :** पौत्र-पौत्री, बच्चों का भाग्य।

**10. दशम भाव :** संतान की बीमारियां और अभिभावक से प्राप्त सुरक्षा, सामान्य रूप से संतान के कर्म।

**11. एकादश भाव :** संतान से लाभ, अभिभावकों की संतान से आकांक्षा।

**12. द्वादश भाव :** संतति की आयु, संतान के लालन-पालन के लिए किया गया व्यय।

### सप्तमांश वर्ग कुंडली का परीक्षण

- डी-7 का बली लग्न संतान के जन्म को सुनिश्चित करता है।

- जन्मकुंडली के लग्नेश को सप्तमांश वर्ग कुंडली के 6, 8, 12 भाव में स्थित नहीं होना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो यह जातक के अपने संतान के साथ अच्छे संबंधों को नहीं दर्शाता है।
- सप्तमांश चार्ट में पंचम भाव से पहली संतान का, सप्तम भाव से दूसरी संतान का विचार किया जाता है। इसी प्रकार अन्य भावों से अन्य संतान का विचार करना चाहिए।
- अभिभावक और संतान के बीच अनुवांशिक संबंध - संतान की कुंडली के मंगल और चंद्र को अभिभावक की कुंडली के पंचम भाव/भावेश या नवम भाव/भावेश के साथ संबंध स्थापित करना अनिवार्य है।
- द्वितीय संतान का जन्म सप्तम भाव से देखा जाता है।
- सप्तमांश वर्ग कुंडली आने वाली पीढ़ी को दर्शाती है जैसे संतान और पोता-पोती।
- सप्तमांश चार्ट का अष्टम भाव पूर्व जन्म के उन कर्मों को दर्शाता है जो संतान प्राप्ति में बाधक है।
- सप्तमांश में राजयोग संतान को ऊंची स्थिति प्रदान करती है या जातक बहुत बुद्धिमान या मेधावी होता है।
- सप्तमांश वर्ग चार्ट में धन योग अधिक संतान होने को दर्शाता है।
- जब नवमेश अष्टम भाव से संबंध बनाता है तो यह जातक के गोद लेने को दर्शाता है।

सप्तमांश वर्ग चार्ट में प्रत्येक सप्तमांश को एक आदर्श नाम से जाना जाता है आदर्श नाम और उनके अर्थ निम्न प्रकार हैं:

1. **क्षार -** यह एक प्रकार का नमक, दृढ़, कठोर, कठिन जीवन का अनुभव
2. **क्षीर -** दूध, पूजा-अर्चना के द्वारा खुशी प्राप्त करना, भगवान की स्तुति और भजन-कीर्तन।
3. **दधि -** जमा हुआ दूध, सिद्धि का प्रयास करना।
4. **आज्यम -** विशुद्ध मक्खन, साधना का फलदायी समय, शांति की प्राप्ति।
5. **इक्षु -** गन्ना रस, परम सुख का आनंद।
6. **मद्द -** शराब या नशीला पदार्थ, मदहोश व्यक्ति के समान आनंद प्राप्त करना।
7. **शुद्ध जल -** शुद्ध पानी, परम आनंद की स्थिति, किसी भी विषम राशि के लिए प्रथम सप्तमांश क्षार होता है और सम राशि के लिए इसका उल्टा क्रम हो जाता है।

**उदाहरण कुंडली -2**

यह जातिका का लग्न सम राशि में 2 डिग्री 47 मिनट का है जो पहले सप्तमांश में है, शुद्ध जल है, लग्नेश बुध विषम राशि में 23 डिग्री 1 मिनट के हैं जो छठे सप्तमांश में है। मद्द में है सूर्य विषम राशि के 20 डिग्री 17 मिनट के सातवें सप्तमांश में शुद्ध

लग्न : 16.09.1970, 06:20, अलीगढ़

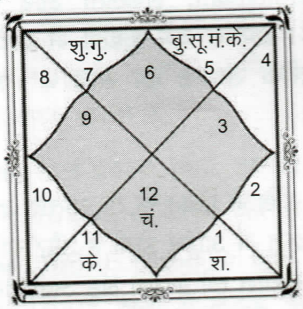


सप्तमांश

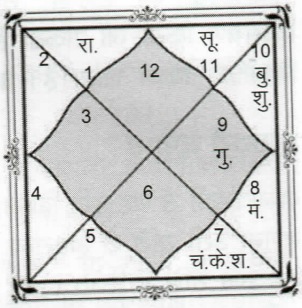


जल में है चंद्र सम राशि में 7 डिगी 20 मिनट में दूसरे सप्तमांश में है जो कि मद्द में है। अतः यह जातिका शरीर और मन से तो सांसारिक सुख में मदहोश होकर आनंद प्राप्ति में है लेकिन आत्मा आध्यात्मिक सुख की ओर है।

**उदाहरण कुंडली -3**

उदाहरण कुंडली के सप्तमांश वर्ग कुंडली में लग्नेश गुरु तृतीय भाव में शनि के साथ शनि की राशि में है। पंचम भाव शनि से दृष्ट है, पंचमेश मंगल राहु-केतु अक्ष पर है, नवमेश सूर्य और

लग्न : 21.02.1964, 15:00, जमशेदपुर

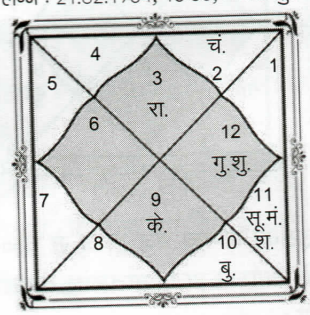


सप्तमांश

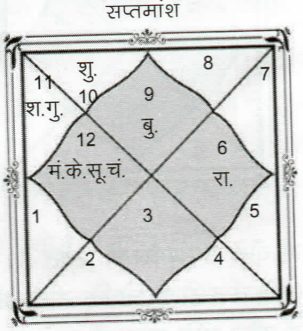


अष्टमेश चंद्र एक साथ पंचमेश के साथ स्थित है। इस जातिका ने 2003 में एक कन्या संतान गोद ली।

**बीज स्फुट और क्षेत्र स्फुट**

बीज स्फुट और क्षेत्र स्फुट कुंडली की गणितीय विधि द्वारा प्राप्त दो बिंदु हैं। बीज स्फुट पुरुष कुंडली के लिए और क्षेत्र स्फुट स्त्री कुंडली के लिए प्रयोग किया जाता है। यह बिंदु संतान पैदा करने की क्षमता दर्शाते हैं।

पुरुष कुंडली में बीज स्फुट सूर्य, शुक्र और बृहस्पति के भोग अंशों का योग होता है। अंशों को मेष के प्रथम बिंदु से लिया जाता है। संतति को सुनिश्चित करने के लिए बीज स्फुट को जन्मकुंडली, नवमांश कुंडली और सप्तमांश कुंडली में विषम राशि में स्थित होना चाहिए तथा बीज स्फुट और इसके स्वामियों की जांच भी इन तीनों कुंडलियों में करनी चाहिए।

स्त्री कुंडली में क्षेत्र स्फुट चंद्र, मंगल और बृहस्पति के भोग अंशों का योग होता है। क्षेत्र स्फुट और उसके स्वामी को जन्मकुंडली, नवमांश कुंडली और सप्तमांश कुंडली में सम राशियों में स्थित होना चाहिए।

सप्तमांश कुंडली में जन्मकुंडली के लग्नेश, पंचमेश और बृहस्पति की युति और इन पर पड़ने वाली दृष्टि को भी देखा जाता है।

सप्तमांश कुंडली में बीज स्फुट या क्षेत्र स्फुट जन्मकुंडली के लग्न से छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित नहीं होने चाहिए अन्यथा शारीरिक समस्याएं देते हैं और यदि यह जन्मकुंडली के पंचमेश से छठे, आठवें, बारहवें भाव में स्थित हो तो समस्याएं पूर्व पुण्य के कारण होती हैं।

**उदाहरण कुंडली -4**

बीज स्फुट जन्मकुंडली में मिथुन राशि में, नवमांश में धनु राशि में, सप्तमांश में सिंह राशि में है। तीनों ही कुंडली में बीज स्फुट विषम राशि में स्थित होकर संतति को सुनिश्चित करता है। बीज स्फुट का स्वामी भी तीनों कुंडलियों में सुस्थित है।

लग्न : 11.10.1942, 16:02, इलाहाबाद

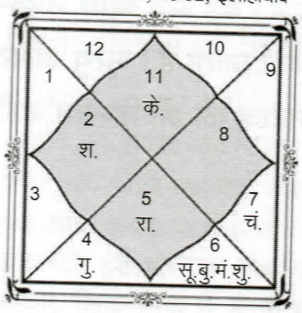


नवांश

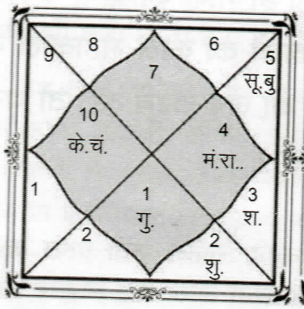


सप्तमांश

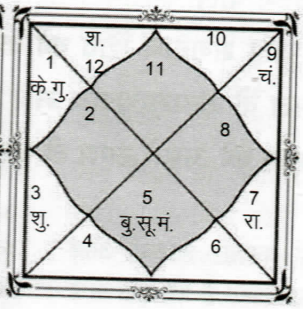


**उदाहरण कुंडली -5 : विकृत संतान प्राप्ति**

इस जातक की सप्तमांश कुंडली में पंचम भाव के स्वामी शुक्र-शनि और केतु से दृष्ट है और पंचम भाव में षष्ठेश एकादशेश मंगल बैठे हैं। इस जातक को एक विकृत संतान की प्राप्ति हुई जिनके जन्म से ही पैर पोलियो से ग्रस्त हैं मगर शुक्र पर गुरु की दृष्टि से बच्ची को मेडिकल सहायता प्राप्त है और बच्ची खुशमिजाज नेचर की है।

लग्नः 09.11.1972, 19:45, जींद,हरि.

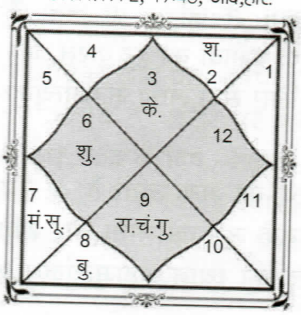


सप्तमांश

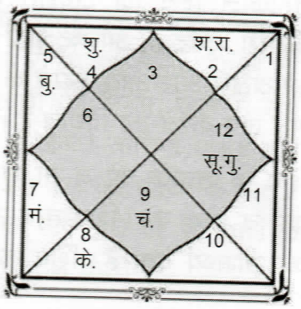


**उदाहरण कुंडली -6 : यशस्वी संतान प्राप्ति**

सप्तमांश वर्ग चार्ट में पंचमेश शुक्र केंद्र में स्वग्रही हो रहे हैं और सप्तमेश चंद्र तृतीय भाव में मीन राशि के गुरु के साथ गजकेसरी योग में है। इस जातिका को यशस्वी संतान की प्राप्ति हुई।

लग्नः 22.11.1972, 05:10, अलीगढ़

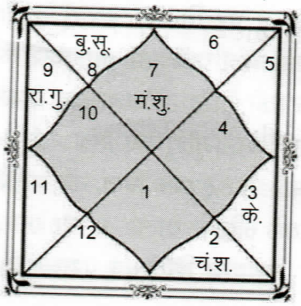


सप्तमांश

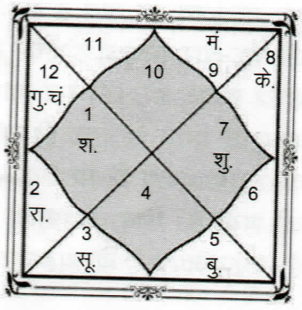


**Bagalamukhi Locket**

This locket is considered highly beneficial for destruction and defeat of enemies. It is also auspicious to get success in legal cases. One can get complete benefits of wearing this locket if Goddess Bagalamukhi is worshipped in front of Bagalamukhi Yantra

**Future Point Pvt. Ltd.**
X-35, Okhla Phase-2,
New Delhi-110020
A-3, Ring Road, South Ex. Part-I,
New Delhi-110049
Ph. : 40541000, 40541021